वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जयप्रकाश नारायण के विचारों की प्रासंगिकता एवं प्रभाव

डॉ. रंजीत कुमार

+2 सहायक शिक्षक
इंटर स्तरीय विद्यालय सजौर, फतेहपुर, भागलपुर

सार : आधुनिक भारत की राजनीति को अपने विचारों से दिशा एवं दशा देकर उसे नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने का श्रेय जिन कुछ गीने–चुने भारत के सपूतों को जाता है, लोकनायक जयप्रकाश नारायण उनमें से एक हैं। सम्पूर्ण क्रांति के जनक, भारतीय लोकतंत्र के सजग प्रहरी जयप्रकाश नारायण का प्रभाव स्वाभाविक रूप से देश तथा देश के युवकों को प्रभावित किया और उनके विचारों से ओतप्रोत होकर देश की सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं के समाधान की ओर अग्रसर हुए। जयप्रकाश नारायण के भावों पर विचार करें तो स्पष्ट होता है उनका ध्येय ही देश और देशवासियों का सम्पूर्ण विकास और कल्याण था। वे समाजवादी समाज में विश्वास करते थे, उन्हें समाजवाद में ही भारत के समस्याओं का समाधान दिखता है। यह उनके विचारों का ही प्रभाव है कि सरकारी तंत्र के खोकले वादे, अलोकतांत्रिक कार्यों, भ्रष्टाचार आदि के विरूद्ध जब कोई आंदोलन को छेड़ा जाता है, तो उसकी प्रेरणा और तुलना दोनों ही जे0पी0 आंदोलन में किया जाता है। आज भी देश में आम जनता की उपेक्षा हो रही है, राजनीतिज्ञ अपने हितों का एवं स्वार्थों को जनता तथा देश पर प्राथमिकता दे रही है। जनता संगठित होकर जे0पी0 के कार्यों और विचारों से प्रेरणा एवं अनुप्रेरित होकर अपना, समाज व देश की सेवा व उत्थान कर सकता है। भारत को एक नये मार्ग पर लाया जा सकता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक उदाहरण पेश कर सकता है।

शब्द कुंजी : लोकनायक, लोकतंत्र, सम्पूर्ण क्रांति, समाजवाद, जयप्रकाश नारायण।

भूमिका

इस अलौकिक नश्वर संसार में करोड़ों लोग जन्म लेते हैं, समय काल के प्रवाह में विलीन हो जाते हैं। इनमें विरले ऐसे होते हैं, जो अपने जीवन के बाद भी लोगों के हृदय में जीते हैं, अपने विचारों से, अपने निष्काम कर्म से, देश के प्रति निःस्वार्थ सेवा और कुछ कर गुजरने की चाह में। आधुनिक भारत की राजनीति को अपने विचारों से दिशा एवं दशा देकर उसे नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने का श्रेय जिन कुछ गिने–चुने भारत के सपूतों को जाता है, लोकनायक जयप्रकाश नारायण उनमें से एक हैं। सम्पूर्ण क्रांति के जनक, भारतीय लोकतंत्र के सजग प्रहरी जयप्रकाश नारायण का प्रभाव स्वाभाविक रूप से देश तथा देश के युवकों को प्रभावित किया और उनके विचारों से ओतप्रोत होकर देश की सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं के समाधान की ओर अग्रसर हुए। आज उनके विचारों का ही प्रभाव है कि सरकारी तंत्र के खोकले वादे, अलोकतांत्रिक कार्यों, भ्रष्टाचार आदि के विरूद्ध जब कोई आंदोलन को छेड़ा जाता है, तो उसकी प्रेरणा और तुलना दोनों ही जे0पी0 आंदोलन में किया जाता है। हाल में भ्रष्टाचार के विरोध में होने वाले देशव्यापी अन्ना आंदोलन हो या फिर सामाजिक न्याय के लिए लालू, नीतीश, मुलायम, शरद के नेतृत्व में सत्ता पर काबिज होना हो अथवा मोदी पटना के गांधी मैदान में भारी भीड़ को देखते हुए सन् 1974 के जे0पी0 आंदोलन की याद को ताजा करे, यह सभी जयप्रकाश नारायण के विचारों की प्रासंगिकता और उनके प्रभावों को ही दर्शाता है।

यह आम मानवीय धारणा है कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ सकता है? यह सवाल हमेशा दिमाग में उठता है जब हम सरकारी तंत्र की मार खाते हैं। लेकिन लोकतंत्र की पटल पर ऐसे नेता हुए हैं, जिन्होंने अकेले ही घड़े रूपी सरकार को तोड़ दिया। जयप्रकाश नारायण एक ऐसे ही शख्स थे, जिन्होंने अपनी जिंदगी देश के नाम कर दी और अकेले दम पर तत्कालीन इंदिरा गांधी की सरकार को दिन में तारे दिखला दिए, उनकी गरूरीयत को धरातल पर ला दिया और पूरे देश में अव्यवस्था के विरूद्ध एक लहर पैदा कर दिया। वह अकेला ही चला था जानि–बे मंजिल मगर, लोग आते गए कारवां बनता गया। देश में समाजवादी आंदोलन में अहम भूमिका निभाने और लोकतंत्र को दोबारा जिंदा करने वाले इसी लोकनायक जयप्रकाश नारायण के बारे में राष्ट्रकवि दिनकर जी ने कहा था, अंधेरे में एक प्रकाश, जयप्रकाश उनके निधन को 34 बरस बीत चुके हैं, लेकिन आज तक उनके व्यक्तित्व का सही तरीके से यह आकलन नहीं हो पाया है कि उनकी मूल राजनीतिक विचारधारा क्या थी, वह देश में किस तरह की राजनीतिक प्रणाली चाहते थे? किसी भी तरह का चुनाव लड़े बिना आखिर वह किस लोकशाही की बात करते थे?[1]

जयप्रकाश नारायण का नाम आते ही इतिहास का वो मंजर सामने आते ही रामलीला मैदान की वह तस्वीर उभरती है जब पुलिस जयप्रकाश को पकड़ कर ले जाती है और वह हाथ ऊपर उठाकर लोगों को क्रांति आगे बढ़ाए रखने की अपील करते हैं। जयप्रकाश नारायण ही वह शख्स थे जिनको गुरु मानकर आज के अधिकतर नेताओं ने मुख्यमंत्री पद तक की यात्रा की है। लालू यादव, नीतीश कुमार, मुलायम सिंह यादव, राम विलास पासवान, जार्ज फर्नांडिस, सुशील कुमार मोदी जैसे तमाम नेता कभी जयप्रकाश नारायण के चेले माने जाते थे। उनके इन्हीं अनुयायियों पर जयप्रकाश नारायण के विचारधाराओं को आगे बढ़ाने व देश निर्माण का दायित्व था, लेकिन सत्ता के लोभ ने उन्हें जयप्रकाश नारायण की विचारधारा से बिल्कुल अलग कर दिया। ये लोग उनके विचारधाराओं के समर्थक के नाम पर जनता से वोट और सहानुभूति तो ले लेते हैं, परन्तु अपने वादों को भूल जाते हैं।[2]

आजादी के बाद उनके कार्यों पर सरसरी निगाह डाले तो, 1954 में उन्होंने विनोबा भावे के सर्वोदय आन्दोलन में जीवन समर्पण की घोषणा की। जयप्रकाश जी ने तत्कालीन लोकनीति के पक्ष में राजनीति छोड़ दिया लेकिन 1960 में वे पुनः राजनीति में आ गए। 1974 में किसानों के बिहार आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। बिगड़ती तबियत के बावजूद उन्होंने तत्कालीन सरकार इंदिरा गांधी के प्रशासनिक नीतियों के विरूद्ध और भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन किया। उनके नेतृत्व में

गुजरात में पीपुल्स पार्टी ने चुनाव जीता। 1975 में जब आपातकाल की घोषणा हुई तो आन्दोलन के दौरान वे 600 व्यक्तियों के साथ बंदी बना लिए गए। 7 महीने जेल में रहने के बाद तबियत खराब होने की वजह से उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। उनका निधन 8 अक्टूबर 1979 को हृदय रोग और मधुमेह के कारण हुआ।[3] उनके निधन के बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री ने उनके सम्मान में सात दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की। ये सारे ऐसे कार्य थे जो एक सच्चा और निःस्वार्थ देश भक्त ही कर सकता है। स्वाभाविक है कि ऐसे देश भक्त और देश प्रेमी नायकों का विचारधारा कार्य सोच न सिर्फ हमेशा से प्रासांगिक रहेगा बल्कि शिद्दत से रहेगा।

बिहार में 18 मार्च 1974 को छात्रों और युवकों के नेतृत्व में एक बड़ा आंदोलन शुरू हुआ था। आंदोलन भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी और गलत शिक्षा नीति के खिलाफ था। इस हिंसा पर उन्होंने बयान दिया था कि "हिंसा और आगजनी से क्रांति नहीं होती है।"[4] आंदोलन के अराजक होते देख कुछ समझदार युवा व छात्र जयप्रकाश नारायण से उनके कदमकुआं स्थित आवास पर मिले और उनसे नेतृत्व करने का आग्रह किया। जयप्रकाश नारायण ने आंदोलन को शांतिपूर्ण व अहिंसक बनाये रखने की शर्त रखीं। छात्रों एवं युवकों ने इस शर्त को मानते हुए शपथ लिया कि– 'हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा।'[5] आंदोलन को दिशा देने के लिए बिहार छात्र संघर्ष संचालन समिति का गठन हुआ था। इस महत्वपूर्ण समिति के सदस्य थे लालू प्रसाद, सुशील कुमार मोदी, राम बहादुर राय, वशिष्ठ नारायण सिंह, शिवानंद तिवारी, रघुनाथ गुप्त, मिथिलेश कुमार सिंह, राम जतन सिन्हा, नरेंद्र कुमार सिंह, भवेशचंद्र प्रसाद, नीतीश कुमार, विक्रम कुंवर, गोपाल शरण सिंह, अक्षय कुमार सिंह, विजय कुमार सिन्हा, रघुवंश नारायण सिंह, उदय कुमार सिन्हा, अरूण कुमार वर्मा, रवींद्र प्रसाद और अशोक कुमार सिंह।[6] आंदोलन के संचालन के लिए पटना के कदमकुआं में स्थापित कार्यालय को चलाने का भार पहले भवेश चंद्र प्रसाद को मिला और बाद में विजय कृष्ण को। समिति के सदस्यों में से राम बहादुर राय, अरूण कुमार वर्मा, उदय कुमार सिन्हा, रवींद्र प्रसाद, रघुवंश नारायण सिंह और अक्षय कुमार सिंह को छोड़कर सभी छात्र व युवा नेता बाद के दिनों में विधायक, सांसद, मंत्री अथवा मुख्यमंत्री बने।

हम इसे जे0पी0 आंदोलन का विरासत अथवा उनका प्रवाह ही मान सकते हैं कि जब देश में भ्रष्टाचार, घोटाला, कालाधन देश बदहाल हो रहा है और नेता बेफिक्र होकर अपना स्वार्थ पूरा कर रहे हैं, तो आम जनता इसके विरोध में रोड पर उतर रहे हैं। वर्ष 2011 गवाह है दो प्रमुख आंदोलनों का जो इस देश में देश की शासन तंत्र की असफलता के विरूद्ध चलाए गए, उसे इस संदर्भ में देखा जा सकता है। हालांकि देखा जाए तो इस शासन तंत्र की विफलता को देश काफी लंबे समय से अनुभव करता रहा है और इसके विरूद्ध कई बड़े आंदोलन भी खड़े हुए परंतु दुर्भाग्यवश वे न केवल स्वयं दिशाभ्रम के शिकार हुए, बल्कि उनका वास्तविक कारण और उद्देश्य भी ठीक से नहीं समझा जा सका। उदाहरण के लिए जयप्रकाश नारायण द्वारा संचालित 1977 में चलाए गए आंदोलन को देखें तो बात साफ हो जाएगी। यह आंदोलन भी शुरूआत में शासन में बैठे लोगों के भ्रष्टाचार के विरूद्ध ही था, परंतु यह तात्कालिक मुद्दा गंभीर तब बन गया जब जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया। परंतु समस्या यह थी कि जयप्रकाश नारायण जिन लोगों के दम पर यह आंदोलन कर रहे थे, उनमें से किसी को भी न तो समस्या की और न ही इस आंदोलन की गंभीरता की समझ थी। वे इस समस्या को केवल और केवल कांग्रेस व इंदिरा गांधी से जोड़ कर देखते थे और समझते थे कि इन दोनों के हट जाने से या फिर बलपूर्वक इन दोनों का सत्ताच्यूत कर देने से समस्या ठीक हो जाएगी। जयप्रकाश नारायण तो समस्या के मूल को समझते थे परंतु दुर्भाग्यवश वे भीष्म मानसिकता से ग्रस्त थे यानी कि शासन में सुधार तो चाहते थे परंतु स्वयं उसमें शामिल नहीं होने की प्रतिज्ञा किए बैठे थे। इसलिए उनके सामने एक ही उपाय था कि वे दूसरे लोगों को इसके लिए तैयार करें। दूसरे लोग तैयार तो हुए परंतु उनकी मंशा कुछ और ही थी। इसी प्रकार हम और भी कई आंदोलनों को देख सकते हैं जो पैदा तो हुए शासन की विफलता के कारण परंतु वे शासन तंत्र पर न तो कोई प्रश्न चिह्न ही खड़ा कर पाए और न ही कोई विकल्प ही प्रस्तुत कर पाए। कुछ ऐसा ही हस्र इस बार भी होने जा रहा है। अन्ना हजारे के आंदोलन का निष्कर्ष तो सामने आ चुका है और बाबा रामदेव के आंदोलन का भी लगभग साफ ही हो चुका है।[7]

यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है, इस बार के दोनों आंदोलनों के संकेत पहले के आंदोलनों की तुलना में कहीं अधिक उत्साहवर्धक थे और यही कारण था कि देश का एक बड़ा वर्ग इसके साथ खड़ा दिखा और आज भी दिख रहा है। शुरूआत में ऐसा लगा कि इन दोनों आंदोलनों में नेता, दल या किसी व्यक्ति विशेष का विरोध नहीं है। दोनों में एक तत्व की बात कही गई थी जो शासन तंत्र के कार्य प्रणाली से संबंधित थी और इसीलिए प्रारंभ में ऐसा आभास हुआ कि संभवतः ये आंदोलन शासन तंत्र की विफलता को समझते हैं और कुछ ठोस विकल्प दे पाएंगे। एक ने शासन तंत्र में भ्रष्टाचार की बात की थी और समाधान के तौर पर लोकपाल बिल को प्रस्तुत किया था। दूसरे आंदोलन में भी बात तो भ्रष्टाचार की ही थी, परंतु इसमें मुद्दा केवल काले धन जैसे आर्थिक विषयों को बनाया गया था। परंतु आज यह साफ हो चुका है कि ये दोनों आंदोलन भी पिछले आंदोलनों की तरह ही दिशाहीन हैं और समस्या को ठीक से समझने में नाकाम हैं। इन्होंने भी अब कारण पर चोट करने की बजाय लोगों व दलों के विरोध पर ध्यान केंद्रित कर दिया है। परिणाम सामने हैं एक से तो जनता का मोहभंग हो चुका है और दूसरे से शीघ्र ही होने वाला है।

जे0पी0 आंदोलन की प्रासंगिकता है और हमेशा रहेगी। लोगों के स्मरण में आज भी यह आंदोलन ताजा है। परन्तु राजनेता इसका उपयोग साध्य के रूप में नहीं साधन के रूप में कर रहे हैं। हाल में नीतीश सरकार जे0पी0 आंदोलन में भाग लेने वाले की सुध लेते हुए उनके लिए सरकार की तरफ से कल्याणकारी योजना चलाने की घोषणा की है– बिहार में 18 मार्च 1974 से लेकर 21 मार्च 1977 तक चले जे0पी0 आंदोलन में हिस्सा लेने वाले आंदोलनकारियों को पेंशन और सम्मानित करने के निर्णय को प्रदेश मंत्रिपरिषद ने मंजूरी दे दी।[11] मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में पटना में राज्य मंत्रिपरिषद की हुई बैठक के बाद नीतीश ने पत्रकारों से कहा कि लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में लोकतंत्र की रक्षा के लिए चलाये गए इस आंदोलन में भाग लेनेवालों को राज्य सरकार जे0पी0 सेनानी सम्मान योजना के अंतर्गत पेंशन देगी और सम्मानित करेगी। नीतीश सरकार ने जे0पी0 आंदोलन के दौरान व्यवस्था परिवर्तन के लिए पांच जून 1974 को आहूत संपूर्ण क्रांति दिवस को राजकीय समारोह के तौर पर मनाये जाने की घोषणा किये जाने के बाद से इसे राजकीय समारोह के तौर पर मनाया जा रहा है।

पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वी0के0 सिंह ने अन्ना हजारे के मंच से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देश में लोकतंत्र को दोबारा स्थापित करने का वक्त आ गया है। उन्होंने लोकनायक जयप्रकाश नारायण के 'सिंहासन खाली करो जनता आती है', नारे को याद दिलाते हुए कहा कि देश में आज सरकार नाम की चीज खत्म हो गई है और ऐसे हालात हो गए हैं कि हर तरफ दिशाहीनता की स्थिति बन गए हैं। आगे उन्होंने कहा कि आज जो हमारे पास भ्रष्टाचारी तंत्र हैं उसे उखाड़ फेंकने का वक्त आ

गया है। कुछ लोग कहते हैं कि हमारे पास जादू की छड़ी नहीं है कि एकदम से सब कुछ बदल दें। मैं कहता हूँ कि सरकार के पास वो जादू की छड़ी है, लेकिन वो मजबूत हाथ नहीं है जो उस छड़ी का इस्तेमाल कर सकें। वो नैतिक बल नहीं है जिनसे उनके हाथ को मजबूती मिले। अब वक्त देश की राजनीति बदलने का है और उसके लिए बड़ा आंदोलन खड़ा करना होगा। लोगों को फौज की तरह काम करना होगा जहां किसी जाति, धर्म, वर्ग का भेद नहीं होता। इसलिए सेना हर जगह सफल होती है। अपने आप को सेना का सिपाही मानिए तभी आप सफल हो सकेंगे।

देखा जाए तो वर्त्तमान समस्याएँ इसी की देन हैं। इसलिए तो रालेगण सिद्धि के छोटे से गांव से आए अन्ना हजारे ने जब 'जन' को जोड़ने की कोशिश की तो जनता उनसे जुड़ती चली गई और व्यवस्था हिलती नजर आई। लोगों ने अन्ना में भी जयप्रकाश नारायण का ही अक्स नजर आया। दरअसल, जयप्रकाश नारायण ने जिस सम्पूर्ण क्रांति का नारा दिया था उसका लक्ष्य अभी भी पूरा नहीं हुआ है। देश को जब इन समस्याओं से निजात मिल जाएगी तभी यह लक्ष्य पूरा हो सकेगा। वर्त्तमान परिस्थितियां उस लक्ष्य को पूरा करने का उन नेताओं को मौका प्रदान कर रही है, जिन्होंने जयप्रकाश नारायण के सान्निध्य की वजह से ही आज एक मुकाम हासिल किया है। इत्तेफाक से जे0पी0 के आंदोलन की आग में तपकर निकले नेता ही आज की राजनीति में विभिन्न दलों में झंडाबरदार बने हुए हैं, लेकिन दलीय संकुचितता के कारण उन्होंने जयप्रकाश नारायण के लक्ष्य को भुला दिया है।

जयप्रकाश नारायण के भावों पर विचार करें तो स्पष्ट होता है उनका ध्येय ही देश और देशवासियों का सम्पूर्ण विकास और कल्याण था। भारत परतंत्रता की बेड़ी तोड़कर महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वतंत्र हुआ, किन्तु नागरिक स्वतंत्रता की लड़ाई अभी बाकी थी, क्योंकि उनके नजरों में आर्थिक स्वतंत्रता का बिना, आजादी की लड़ाई अधूरी है। वे समाजवादी समाज में विश्वास करते थे और उन्हें समाजवाद में ही भारत के समस्याओं का समाधान दिखता है। समाजवाद की उनकी व्याख्या थी– रोटी के साथ जादी, बिना आजादी की रोटी का मतलब होता है, तानाशाही और बिना आजादी के रोटी का मतलब होता है शोषण और शोषण मुक्त समाज उनके जीवन का लक्ष्य था। उनके जीवन का एकनिष्ठ सिद्धांत था कि रोटी के लिए, सत्ता के लिए, सुरक्षा के लिए, समृद्धि के लिए, राज्य के वैभव या दूसरी किसी भी वस्तु के लिए, मैं कभी सौदा नहीं करूँगा। न उनको राज्य पद चाहिए था, न उन्हें स्वर्ग की ही इच्छा थी। मात्र दुःख से तपे हुए प्राणियों की पीड़ा दूर हो, यही उनकी एकमात्र इच्छा थी।

दरअसल, सम्पूर्ण क्रांति की शक्ति बाद में दलों में बँटकर टूट गई और लोकमानस में यह प्रचलित विरोधवादी राजनीति का ही एक रूप होकर रह गई। वह राष्ट्र के मूलगामी पुनर्निर्माण का राष्ट्रीय अभियान नहीं बन सकी। समाजवादी नेता शरद यादव कहते हैं, "गांधी हो या जयप्रकाश नारायण, हर युग और काल में उनके विचार प्रासंगिक हैं। आज की लड़ाई तो सिर्फ भ्रष्टाचार व महंगाई से है, लेकिन जयप्रकाश नारायण ने जब लड़ाई लड़ी थी तब वह कई मुद्दों को लेकर मैदान में उतरे थे, जिनमें भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और सामाजिक विषमता भी शामिल थे। व्यापक तौर पर देखा जाए तो वह राष्ट्र के लिए लड़ रहे थे।"[11] जे0पी0 का कहना था कि सम्पूर्ण क्रांति समग्र है, सतत् है, शुद्ध साधनों की है। ऐसी क्रांति उतनी ही शाश्वत है जितना समाज का जीवन। दोनों का कोई अंत नहीं है। हर काल और परिस्थिति में उसका स्वरूप बदलता रहेगा, उसकी पद्धति नई होती रहेगी। हाँ, कार्यक्रम बदलेंगे और कार्यशैली बदलेगी। हाल ही में अन्ना हजारे के नेतृत्व में हुए भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन में यह देखने को भी मिला। वास्तव में लोकतंत्र जनता की शक्ति के बिना नहीं बच सकता। इसलिए जरूरत है जे0पी0 के नाम पर चल रही राजनीति को बंद कर उनके विचारों को आत्मसात करने की।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हमारे देश में जयप्रकाश नारायण जैसे सच्चे देशभक्त और निस्वार्थ महापुरुष ने जन्म लिया। उनकी जो राजनीतिक विचारधाराएँ थीं, नागरिकों और देश के समग्र उत्थान के प्रति जो नजरिया था, विकट परिस्थितियों से लड़ते हुए उन पर विजय पाने का जो उनमें जो गजब आत्मविश्वास था वे सभी असाधारण और हमेशा प्रासंगिक रहेगा। जे0पी0 आंदोलन की उपज आज की भारतीय राजनीति में प्रभावी है। परन्तु चिंता इस बात की है कि आज देश इनके विचारों, कार्यों का सिर्फ मौखिक गुणगान करने से नहीं थकते, बस यही रह गया है। हालांकि आज भी अन्ना आंदोलन हो या सामाजिक बदलाव अथवा सशासन को सही रास्ते पर दिखाने की बात हो, उसकी तुलना जे0पी0 आंदोलन से करने की प्रयास जरूर की जाती है, जो जे0पी0 के विचारों एवं कार्यों के सार्थकता को दर्शाता है। आज भी देश में आम जनता की उपेक्षा हो रही है, राजनीतिक अपने हितों का एवं स्वार्थों को जनता तथा देश पर प्राथमिकता दे रही है। ऐसी स्थिति में जे0पी0 के प्रेरणा एवं विचारों से अनुप्रेरित होकर हम अपने जायज अधिकारों के लिए लड़ सकते हैं। देश और समाज की सेवा कर सकते हैं और जरूरी भी नहीं कि उसके लिए 1971, 1974 जैसे आंदोलन हो। जनता संगठित होकर छोटे समूहों में ही सही जे0पी0 के कार्यों और विचारों से प्रेरणा एवं अनुभव लेकर अपना, समाज व देश का उत्थान कर सकता है। भारत को एक नया मार्ग पर लाया जा सकता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक उदाहरण पेश कर सकता है।

संदर्भ :

1. 'रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं उसको जयप्रकाश', यशवंत सिन्हा (सं0), स्वराज्य से लोकनायक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 621.
2. श्याम कृष्ण पाण्डेय, भारतीय छात्र आंदोलन का इतिहास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2009, पृ. 225.
3. समृध शेखर, श्यामल दास, यशवंत सिन्हा (सं0), पूर्व उद्धृत, पृ. 47.
4. अजीत भट्टाचार्जी, जयप्रकाश नारायण : ए पोलीटिकल बायोग्राफी, दिल्ली, 1975, पृ. 239.
5. पूर्वोक्त, पृ. 237–38.
6. पूर्वोक्त.
7. हिन्दुस्तान, 20 अक्टूबर 2013.
8. प्रिंट मीडिया, 9 नवम्बर, 2014.
9. पूर्वोक्त.
10. आजतक, 24 जनवरी 2014, नई दिल्ली.
11. प्रभात खबर, 20 जुलाई, 2013.